मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

# मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

मालिकों द्वारा मज़दूरों पर हाथ उठाने की एक और वारदात 2
राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक मामलों का हो निस्तारण 4
एक वर्ष बाद भी आजाद नगर का बलात्कार/हत्या का मामला अंधेरे में 5
फिदेल कास्त्रो : बीसवीं शताब्दी का एक महानायक 6
कपूर को डीजीपी बनाने में कामयाब हुए खट्टर 8

वर्ष 37 | अंक -40 | फरीदाबाद | 20 अगस्त-26 अगस्त 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

# मेवात में दंगेबाज़ों को मुंह की खानी पड़ी

## 52 पाल के पंचों और संयुक्त किसान मोर्चा के विरोध दर्ज कराने से कच्छाधारियों में बेचैनी

**फ़रीदाबाद ( मज़दूर मोर्चा )** मेवात और खासकर हरियाणा में सदियों से चले आ रहे हिंदू-मुस्लिम भाईचारे को तोड़ने में जुटे संघी दंगेबाज़ों और उनकी समर्थक खट्टर सरकार को तब झटका लगा जब 52 पाल के पंचों और संयुक्त किसान मोर्चा ने उनकी इस साज़िश में शामिल नहीं होने की घोषणा कर दी। दो दिन पहले यानी 13 अगस्त को पलवल के पोंडरी गांव में हुई कथित महापंचायत में बड़े-बड़े नफ़रती दावे करने वाले धर्मोन्मादी इतने बड़े स्तर पर महापंचायत का विरोध देखने-सुनने के बाद चुप्पी साधे हुए हैं। उनकी चाल नाकाम करके हरियाणा की जनता ने पीढ़ियों से चले आ रहे सौहार्द और सांस्कृतिक एकता को बरक़रार रखने का संदेश कट्टरपंथियों से लेकर सरकार को दिया है।

जलाभिषेक यात्रा के नाम पर अवैध हथियारों और दंगे भड़काऊ नारे लगाने वाले बजरंगियों की 31 जुलाई को हुई जबरदस्त पिटाई से खिसियाए संघी चट्टे बट्टों ने इस घटना की आड़ में पूरे प्रदेश को जलाने की साज़िश रचनी शुरू की। जिस निषेधाज्ञा में मुस्लिम समाज को जुमे की नमाज़ मस्जिद में अदा करने से प्रशासन ने रोका उसी ने संघी चट्टे-बट्टों को पलवल के गांव पोंडरी में 13 अगस्त को 'हिंदू' सर्वजातीय महापंचायत का आह्वान करने की इजाजत दी।

यात्रा में हुए विवाद के बाद पलवल में भी काफी हिंसा हुई, बावजूद इसके बजरंगियों, विहिपियों ने पोंडरी नौरंगाबाद को महापंचायत के लिए चुना। महापंचायत

का उद्देश्य ही विक्टिम कार्ड खेल कर हिंदुओं भी भावनाओं को भड़काना था। महापंचायत में वक्ताओं ने यही किया, समस्या से ज्यादा मुस्लिम समाज को गालियां देने, कोसने और भड़काऊ बातों में समय बिताया गया।

संघी दंगेबाज़ों के चाल चरित्र से वाकिफ रावत, डागर, सहरावत, चौहान आदि पालों ने पहले ही इसका बहिष्कार कर दिया था। 52 पाल के अध्यक्ष चौधरी अरुण जेलदार को कट्टरपंथियों ने बहला-फुसला कर महापंचायत में बुला लिया था। अध्यक्ष को बुलाने का उनका उद्देश्य यह दर्शाने का था कि उन्हें सभी पालों का समर्थन मिला हुआ है।

महापंचायत के दूसरे दिन ही 52 पालों के अन्य पंचों ने भी इस महापंचायत का विरोध कर खुद को इससे और इसके द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों से अलग रखने की घोषणा कर दी। प्रदेश के समाज का बड़ा हिस्सा पालों के अलग होने से कट्टरपंथियों के होश उड़ गए। जिन लोगों को धर्म की चटनी चटा कर 28 अगस्त को दोबारा जलाभिषेक यात्रा निकाले जाने की हुंकार भरी गई थी उन्हीं ने इसका बायकाट कर दिया। बायकाट के बाद से कट्टरपंथी कुछ बोलने की हालत में नहीं रहे गए।

इस बायकाट का सबसे बड़ा झटका हिंदुत्व के खेत में वोटों की खेती करने वाली भाजपा और मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर को लगा। आम जनता ये समझने लगी है इस तरह की खेती में मानव खून से सिंचाई होती है, जिससे बचने के लिए समाज इन दंगाइयों के विरुद्ध एकजुट खड़ा होता जा रहा है। नूह दंगे के बाद विक्टिम कार्ड खेल रहे संघ और बुलडोजर चला कर हिंदू हृदय सम्राट बनने की तैयारी कर रहे खट्टर ने पाया कि दांव उल्टा पड़ गया है। हरियाणा की सर्वजातीय एकता के चलते धर्मोन्मादियों के झूठे और समाज को तोड़ने वाले कार्य कामयाब नहीं होंगे। खट्टर जानते हैं कि यही बायकाट करने वाले आने वाले चुनाव में उनकी लुटिया डुबो सकते हैं। इधर जी-20 समूह की बैठक में सरकार को अंतर्राष्ट्रीय समूहों के प्रतिनिधियों को अपने निष्पक्ष होने का संदेश भी देना था। ऐसे में उन्होंने पलटी मारी, अभी तक एकतरफा कार्रवाई में जुटे खट्टर ने वोट बैंक बचाने और विश्व में अपनी साख बचाने के लिए अपने प्यारे प्यादे बिट्टू बजरंगी की बलि चढ़ा दी। जिस बिट्टू के आगे पुलिस नतमस्तक रहती थी उसे ही गिरफ्तार कर घसीटते हुए ले जाया गया। इसकी वीडियो भी वायरल की गई, ताकि असंतुष्ट पालों में यह मैसेज जाए कि सरकार निष्पक्ष होकर काम कर रही हैं।

खट्टर चाहे जितने हाथ पैर मार लें बीते नौ वर्षों में केंद्र और राज्य सरकारों ने जो बांटो और राज करो की राजनीति की है उसे अब जनता समझ चुकी है। महापंचायत का बहिष्कार इसका ही नतीजा है और भविष्य में चुनाव में भी जनता इसे साबित करेगी।

## मंत्री संदीप सिंह पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाने वाली जूनियर महिला कोच : 8 महीने से मेरी लड़ाई लड़ने में मीडिया ने जितनी मदद की है उसके लिए धन्यवाद

मंत्री संदीप : खिलाड़ी के नाम पर बदनुमा दाग

''8 महीने हो चुके हैं लेकिन अभी तक चंडीगढ़ प्रशासन ने मंत्री संदीप सिंह के खिलाफ चार्जशीट कोर्ट में दर्ज की है। संदीप सिंह ने नार्को और ब्रेन मैपिंग टेस्ट करवाने से साफ इंकार कर दिया। हरियाणा के मुख्यमंत्री शिकायत वापस करने के लिए फ़ोर्स कर रहे है। ताऊ देवी लाल स्टेडियम में प्रैक्टिस मेरी बैन कर दी। मुझे साफ कहा गया कि आप मुख्यमंत्री से मिले। मुझे प्रेशर डाला जा रहा है कि संदीप सिंह के मामले में मुख्यमंत्री को इन्वॉल्व ना किया जाए। बीजेपी सरकार के डर से बहुत से लोगो ने मेरा साथ छोड़ दिया है।

8 महीने से मुझे टार्चर किया जा रहा है, शिकायत वापस लेने के लिए फ़ोर्स किया जा रहा है। दूसरी ओर संदीप सिंह को झंडा लहराने के सम्मान दिया जा रहा है। मैंने कभी भी मुख्यमंत्री को टारगेट नही किया, हर बार मुख्यमंत्री संदीप सिंह को बचाने की कोशिश कर रहे है। संदीप सिंह से झण्डा लहराना मेरे मुँह पर तमाचा जैसा है। जो मुख्यमंत्री बार-बार कर रहे है। अपने कार्यालय में हमेशा ईमानदारी से काम किया है। मुझे बिना कुछ बताए ससपेंड कर दिया गया। जिस मुख्यमंत्री को लड़कियों के जीन्स डालने से आपत्ति है उनसे क्या ही उम्मीद कर सकती हूं।

बीजेपी सरकार समाज मे क्या संदेश दे रही है। आरोपी देश का झंडा लहरा रहा है, और पीड़िता दर-दर भटक रही है। मुख्यमंत्री ने सामने से आकर बेटी का अपमान है।

मैन आजतक मुख्यमंत्री को अपशब्द नही कहे। मेरे लिए जैसा संदीप सिंह है उसे बचाने वाला भी वैसा ही है। मुझे ससपेंड बिना किसी कारण के किया गया, बस टेक्निकल रीज़न दिया जा रहा है।

10 अगस्त को सीएम से मिलने हरियाणा निवास गयी थी, यह कहा जा रहा है कि मैंने सीएम को अपशब्द कहे है। जो मैंने नही किया। मैं सीएम से पब्लिकली मिलना चाहती हूं, अकेले में नही। मुख्यमंत्री पब्लिकली एक लड़की को अनर्गल कहते है। बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष ओपी धनखड़ संदीप सिंह को सगठन की मीटिंग में आने नही देते और मुख्यमंत्री संदीप सिंह का फेवर कर रहे हैं। अपने निलंबन के खिलाफ दो-तीन दिनों में हाई कोर्ट का रुख करूंगी।''

# संघ की नीति, इस्तेमाल करो और फेंक दो

**मज़दूर मोर्चा ब्यूरो**

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ इतना अविश्वसनीय है कि इस पर भरोसा करना खतरे से खाली नहीं हो सकता। जिस बिट्टू बजरंगी उर्फ राजकुमार से इन्होंने पल्ला झाड़ लिया है, उसे अब तक गोद में क्यों बैठाए हुए थे? यदि संघियों, विश्व हिंदू परिषद आदि आदि का उससे कोई संबंध नहीं था तो बीते डेढ़ दो साल से जब वह भड़काऊ भाषण बाजी करता आ रहा था तब इनके मुंह में दही क्यों जमी हुई थी, तब इन्होंने खड़े होकर क्यों नहीं इसके विरोध में अपनी जबान खोली? संघियों की कथनी और करनी में यहीं से फर्क नज़र आता है कि जब तक बिट्टू गिरफ़्तार नहीं किया गया विहिप ने उसके बजरंगदल का नहीं होने संबंधी कोई बयान जारी नहीं किया। बिट्टू ने 31 जुलाई को भड़काऊ भाषण दिया तब विहिप कहां थी, तब बयान क्यों नहीं जारी किया गया?

तब तो उसे लग रहा था कि हिंदुत्व का एजेंडा परवान चढ़ रहा है तो क्यों कुछ बोला जाए लेकिन जैसे ही बिट्टू पुलिस के हत्थे चढ़ा, विहिप ने बयान जारी कर उससे पल्ला झाड़ लिया।

बीते करीब डेढ़ दो साल से शायद ही कोई सप्ताह ऐसा बीतता होगा जिसमें यह शहर में कोई न कोई सांप्रदायिक हुड़दंगबाजी न करता हो। पिछले ही माह इस बिट्टू ने अपने गुंडों के साथ मिलकर थाना धौज के इलाके में एक ग़रीब जमात अली की 55 गायें, 14 बकरियों और चार गधे लूट लिए थे तो इसके विरुद्ध कार्रवाई करने के बजाय उल्टे जमात अली पर ही गोकशी का केस लाद दिया गया।

क्या ये सारी बदमाशी केवल बिट्टू के कहने पर ही पुलिस कर रही थी? यदि बिट्टू को सरकारी संरक्षण नहीं था तो कोताही करने पर पुलिस अधिकारियों के खिलाफ सरकार द्वारा कार्रवाई क्यों नहीं की गई?

शेष पेज दो पर